International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 859-861

डॉ० बलदेव वंशी के काव्य मे सांस्कृतिक युगबोध के विविध आयाम

वीरेन्द्र सिंह
जखाला, गुड़ियानी, कोसली, रेवाड़ी, हरियाण, भारत।

प्रस्तावना

सांस्कृतिक शब्द का अर्थ है---- " संस्कृति संबंधी। "1 संस्कृति का शाब्दिक अर्थ है अच्छी स्थिति, सुधरी हुई स्थिति आदि का बोधक हैं। संस्कृति का संबंध मानव के रहन – सहन, आचार-विचार, व्यवहार से संबंधित उन परंपराओं से है, जो उसकी रूचियों के परिष्करण तथा शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास में सहायक होती हैं। विचारकों ने संस्कृति के दो महत्वपूर्ण पहलू स्वीकार किये है – आध्यात्मिक तथा आधिभौतिक। ये पहलू एक दूसरे के पूरक है। आधिभौतिक संस्कृतिमानव के बाह्य जगत के संस्कारों को संस्कारित करती हैं। भारतीय संस्कृति की गौरवगाथा अत्यंत महान् तथा उज्ज्वल हैं। इसमें विश्व की सभी संस्कृतियों को समाहित एवं आत्मसात् करने की क्षमता है। यह विश्वबंधुत्व एवं वसुधैवकुटुम्बम् की भावना से ओत- प्रोत है। वंशी जी के काव्य में विनियोजित विशाल भारतीय संस्कृति के प्रमुख आयाम इस प्रकार है :-

मानवतावादी दृष्टिकोण

मानवता का शाब्दिक अर्थ है - "वह वाद जिसमें संसार के सभी मनुष्यों की मंगलकामना का विधान हो। "2 मानवतावाद एक ऐसी विचारधारा है जो सामूहिक रूप से सभी मानवों का हित चिंतन करती है, जिसका मुख्य लक्ष्य मानव जाति का कल्याण हैं। मानवतावाद कल्याण, सेवा और परोपकार की विशिष्ट भावना से अनुप्राणित हैं।

वंशी जी विचार कविता के कवि है। इन्होंने निरन्तर संतो की अमृतवाणी का अनुशीलन एवं अध्ययन किया है। उनकी चेतना मानवता से अभिप्रेरित है। वंशी जी का काव्य भी व्यापक एवं उदार भावना से अनुप्राणित है। 'वियतनाम और युद्ध' कविता में कवि युद्ध को रोकने तथा मानवतावाद का संदेश देता है :-

तुमने दिया किसी को सर्वनाश
किसी को रीढ़ की हड्डी का दर्द
मानवतावाद को घुल-घुल मरने की दवा
फिर भी किसी को तुम्हारी नीयत पर
शक नहीं हुआ.....। 3

मानवतावाद की भावना से प्रेरित व्यक्ति सबका हित चाहता है। बलदेव वंशी जी की दृष्टि में सभी प्राणी समान है। मनुष्य के जीवन में आये दुःख, दर्द व्यथा उसे सोचने पर मजबूर कर देते है। वही मनुष्य सोचता है जो मानवतावादी भावना से प्रेरित होता है। मानवतावादी व्यक्ति मनुष्य के मन में छिपे घावों एवं पीड़ा को आसानी से पहचान लेता है। ' महाभारत संदर्भ' कविता में कवि कहते है :-

दांव पर लगे है मूल्य / चालों में ढल रही चाल
तर्कों से निकल रहे वितर्क / कोई नहीं जाता वेदना विस्तार में
कोई नहीं चलता सहज यंत्रणा की धार पे
घिरता नहीं आस्था विश्वास में
योद्धा के शरीर पर लगे तगमो को गिनते है सभी
घावों को नहीं / घावों पर लगे टांके। 4

मानवतावाद विश्व- कल्याण की भावना से ओत- प्रोत होता है। यह राष्ट्र और मजहब से कहीं ऊँचा है। वंशी जी की संवेदना मानवतावाद की विशिष्ट भावना से अनुप्राणित है। 'उत्सव' कविता में वंशी जी कहते है -

उत्स से जुड़ा / हर भाव / उत्सव है / हर श्वास
उत्सव है / और जन -चिंता ही / सृजन चिंता। 5

पौराणिकता

पौराणिकता का शाब्दिक अर्थ है - पुराण संबंधी। पौराणिक संदर्भ ऐसी प्राचीन कथाओं से सम्बंधित है जिनमें मानव ने सृष्टि की उत्पत्ति एवं रचना प्राकृतिक घटनाओं और देवी - देवताओं की उत्पत्ति अथवा उनके अपूर्व धैर्य, उत्साह- सृजन शक्ति की कल्पना की होती है। वंशी जी ने समसामयिक चेतना को अभिव्यक्त करने के लिए पौराणिक संदर्भो का समायोजन किया है। कवि ने कहा है –

तब आप जानेंगे कि / हमेशा पाप पूर्ण धन नहीं
पुण्यमय श्रम जीता है। पश्चिम की उक्ति नहीं
गीता है ! गीता है !! 6

समकालीन युग की परिस्थितियॉ, हिंसा, घृणा वैरभाव, खून-ख़राबा आदि से ओत- प्रोत है। आम आदमी शोषण की पीड़ाओं को झेल रहा है। कवि ने व्यक्ति की मानसिक व्यवस्था को पौराणिकता से जोड़ने का प्रयास किया है।

वे अब उसके पास नहीं जाना चाहते / कही वह विक्षिप्त !
लाखों मौतों और रिसते घावों को अपने भीतर झेल रहा बूढ़ा
किसी पौराणिक जोश में आकर / समझोते की तरह
स्थितियों से फिर न टकरा जाय। 7

'आत्मदान' कवि का एक पौराणिक काव्य है। जिसमें समकालीन युग की विद्रूपताओं एवं विसंगतियो को उजागर किया है। इसमें 'अहल्या, का त्याग संपूर्ण नारी जाति के लिए प्रेरणा स्रोत है। कवि ने बताया कि समाज में अकेला पुरूष सिद्धि प्राप्त नहीं कर सकता। उसे प्रतिपल नारी सहारे की आवश्यकता पड़ती है। अहल्या ने स्वयं पीड़ा झेलकर पुरुषत्व गर्व को झुकने पर मजबूर कर दिया। अहल्या ने त्याग के बल पर मुक्ति पा ही ली, जिनके राम भी साक्षी है -

आज वह क्षण आया / जब तुम / शिखर स्वयं उतरे हो
नीचे/राम साक्षी है / मैंने फिर पति को पाया है।
राम साक्षी है / बुद्धि ने तप सिद्ध किया है
राम साक्षी है / रात्रि राकेशमयी हुई है
अपनी प्रकृति पर / अपनी धरती पर
जन कल्याण अपने 'स्व' पर / गर्वमयी है। 8

'मन्यु' महाकाव्य में कवि ने त्रियुगीन संदर्भ -त्रेता, द्वापर और कलियुग के माध्यम से' मन्यु 'के विभिन्न स्वरूपो को पौराणिक संदर्भ में दर्शाया है। आधुनिक युग के संदर्भ में ही कवि ने नामदेव, दीर्घतमा और त्रित के मिथक के माध्यम से जन सामान्य की मार्मिक स्थिति की अभिव्यंजना की है।

राम आते है बाली वध को छुपकर / और रावण सीता हरण को
अपनी -अपनी उपस्थित जताने / काल को अपनी
धमनियो में सजाने / दिशाओं को अपनी सांसो में गाने। 9

अत : कवि ने चरित्रगत विशिष्टताओं के माध्यम से युग में परिव्याप्त संत्रास, विद्रूपता एवम् वेदना को अभिव्यक्त किया है। 'वाक्गंगा' पौराणिक काव्य में गंगावतरण पौराणिक कथा के माध्यम से 'वाक्' या शब्द तत्व में के उद्भव सृष्टि की प्रक्रिया कहीं गई है।

ऐतिहासिकता

ऐतिहासिकता का संबंध इतिहास से होता है। जिसका शाब्दिक अर्थ है - ऐसा ही था या ऐसा ही हुआ। इनमें उन सभी लिखित या मौखिक वृतों को शामिल किया जाता है जिसका संबंध अतीत की यर्थाथ परिस्थितियों एवं घटनाओं से होता है। डॉ० हरदेव बाहरी के अनुसार, "इतिहास व्यक्ति, समाज, देश की महत्वपूर्ण विशिष्ट एवं सार्वजनिक क्षेत्र की घटनाओं का कालक्रम में लिखा हुआ विवरण, तथ्यों, घटनाओं का कालक्रमानुसार विवेचन है। "10 वंशी जी ने अपने काव्य में ऐतिहासिक संदर्भो को प्रस्तुत किया है। वंशी जी आस्थावादी कवि है। इतिहास की घिनोनी घटनाये अनायास ही वर्तमान संदर्भो की सूचना देती प्रतीत होती है। 'इतिहास सन्दर्भ' कविता मई कवी ने कलिंग, पाटलीपुत्र, अशोकचक्र, राजाज्ञा आदि ऐतिहासिक संदर्भो के माध्यम से समसामयिक मुद्दों, व्यवस्था एवम् राजनीतिज्ञों पर व्यंग्य किया है –

कलिंग पतन का शोक / पुछ नही पाता कभी
दिख नही पाता अशोक / अशोक चक्र करता है पीछा
इतिहास में जीते कुणाल का / मेरा ...11

वंशी जी ने समकालीन युग में संतप्त मानव की संवेदनाओ एवं अनुभूति यो को अभिव्यक्त करने के लिए अनेक ऐतिहासिक घटनाओं के संदर्भ प्रस्तुत किए है। वर्तमान समाज हिंसा, घुटन, संत्रास, वैरभाव, आर्थिक विषमता आदि विसंगतियो से ओत- प्रोत है। जन- सामान्य घुट- घुट कर जीवन जी रहा है। "मैं ही हूँ साक्षी" कविता में कवि ने मिल्टन, सूरदास और सार्त्र के दर्द के परिप्रेक्ष्य में मानवीय दुःखो को अभिव्यक्त किया है -

मिल्टन, सूरदास और सार्त्र का दर्द / मेरा नहीं आज
सहज इन आँखो का जाना (मुझे क्षमा करें पूर्वज)
मेरा दर्द इतिहास हो रहा है।
मैंने आज अँधेरी दुनिया में प्रवेश किया है। 12

कवि ने ऐतिहासिक संदर्भो के माध्यम से समाज में फैली अनेक हिंसात्मक प्रवृतियों का वर्णन किया है। समकालीन परिस्थितियॉ इतनी विकट हो गई कि समाज निरन्तर पतन की और अग्रसर हो रहा है। सामाजिक मूल्यों का विघटन हो रहा है, चमक - दमक के परिवेश में सब कुछ अंधकारमय हो गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय और विश्व कल्याण

अन्तर्राष्ट्रीय और विश्व कल्याण की अवधारणा अत्यन्त व्यापक है। यह समस्त मानव जाति का हित - चिंतन करती है। वंशी जी एक चिंतक, विचारक, मानवतावादी एवम् सांस्कृतिक चेतना के कवि है। इनकी दृष्टि बड़ी व्यापक है। वंशी जी ने विश्व कल्याण के लिए अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओ और सभाओ से सम्बद्ध है। इनके लिए सम्पूर्ण विश्व ही एक परिवार के समान है 'वियतनाम और युद्ध' कविता में कवि ने सन् 1965 में क्रिसमस पर अंशत: युद्ध के रोकने के समाचार पर चिंता व्यक्त की है जिसमे विश्व कल्याण की भावना मुखरित हुई है।

ईसा के बेटो ! इसा की लाश को घसीटो मत जेरूसलम से
वियतनाम तक रोको इन जहरीली खबरों को
घायल चीखती आंधियो को / आज सौंदर्यवादी होना
समयवादी होने से कही कम साबित नही हो रहा। 13

समस्त विश्व एक जैविक इकाई है। कवि ने प्रकृति की पीड़ा को मनुष्य की पीड़ा के अन्त: में देखा और पहचाना। वर्तमान युग में रंग-भेद, नस्लवाद, शोषण, अत्याचार केवल भारतीय समाज तक ही नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक परिव्याप्त है। आधुनिक युग में छदम् रचता बाज़ार और वर्चस्वी सत्ता- सभ्यता नजरबंदी का खेल –खेल रही है। जिसने जीवन का सही परिप्रेक्ष्य ओझल कर दिया। नफरत दहशत, आतंकवाद, शोषण एवम् अत्याचार के कारण समस्त विश्व परिदृश्य पर युद्ध के बादल मंडरा रहे है। समस्त विश्व इतना सूक्ष्म काय लगता है कि एक स्थान पर युद्ध होने से समस्त दुनिया उससे प्रभावित हो जाती है। वर्तमान विकट सभ्यतो को संवारने की शक्ति यदि किसी में है तो वह है नैतिक, सांस्कृतिक और मानवीय मूल्य।

देश प्रेम की भावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह जन्म से मृत्यु पर्यन्त सामाजिक परिवेश से आबद्ध रहता है। देश के लिए प्रतिक्षण स्वयं को न्यौछावर करने तथा अपना तन- मन - धन समर्पित करने के लिए तत्पर रहना देशभक्ति की भावना कहलाती है। कवि की चेतना देशभक्ति की भावना से ओत -प्रोत है। इनकी अपने देश, समाज के प्रति अगाध प्रेम एवं श्रद्धा व निष्ठा है। वंशी जी के काव्य में देश के प्रति प्रेमभावना अनेक स्थानो पर झंकृत हो उठती है -

बंद आंखों की मज़बूरी / सूखे की राजनीति
बाढ़ वाले प्रदेशो के दौरे / आत्मा की आवाज
लाटरी के बंद ढोल में डाल दिये गए है
घुमाने के लिए फिलहाल / देखे कौन- सी
चिट निकलती है पहले / आत्मा की आवाज
या राजस्थान का सूखा / या देश का भविष्य।

वंशी जी का चिंतक मन देशप्रेम की अनूठी भावनाओं से सराबोर है। ' इतिहास कभी नहीं हारता ' कविता में कवि कहता है कि समय साक्षी है -इतिहास कभी नहीं हारता, वह केवल मारता है अप्राकृत को आततायी को तथा ठूँठ को। कवि कहता है कि -

मेरे प्राण ! मेरे देश ! तुम यहाँ कहाँ भटकते
किस - किस देश -प्रदेश में बँटे या सो रहे हो ?

अतः हम कह सकते है कि कवि के मन में देशप्रेम की भावना कूट - कूटकर भरी हुई हैं तथा इसी भावना के कारण वे देशवासियों को प्रेरित करते है।

आशावादी स्वर

आशावादी शब्द का शाब्दिक अर्थ है - 'आशावाद को मानने वाला, अच्छे परिणाम में विश्वास रखने वाला। "जीवन में आस्था एवं आशा आने से व्यक्ति जिंदादिली से जीवन जीता है। आशावादी व्यक्ति का जीवन सरसता से परिपूर्ण हो जाता है तथा उसके जीवन की कष्टदायक परिस्थितियां भी मनोहारी हो जाती है। वंशी जी एक कुशल आशावादी कवि है। उन्हें चारों और फैली विषम और विसंगत परिस्थितियों में भी आशा की किरण दिखाई देती है। कवि कहता है कि –

इन निष्ठापूर्ण / निर्माण में व्यस्त हाथों के
लिए रुको / और इन मजबूत हाथों की आवाजें
सुनो / नहीं तो वे स्वयं बोलेंगे
मशीनो की इन बे -सुरी आवाजो का रहस्य खोलेंगे
अपने कर्म को / धर्म से तौलेंगे तब

नैतिक मूल्य

सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों की भूमिका अहम् है। नैतिकता के बिना व्यक्ति एवं समाज का विकास निराधार है। नैतिक मूल्यों के बिना व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं है। समाज में निरन्तर आधुनिकता एवं भौतिकता का बोलबाला है। यही कारण है कि आज समाज नैतिक मूल्यों से खाली हो चूका है। समाज में चल रही परम्परावादी नीतियां, रिश्ते-नाते, प्रेम -सौहार्द, सच्चाई आदि समाप्त हो चुके है। आज नैतिक मूल्यों का स्थान लूट-पाट, धोखेबाजी, जालसाजी, खून-ख़राबा तथा शोषण ने ले लिया है। प्राचीन काल से ही भारत में गुरु - शिष्य का संबंध बड़ा पवित्र माना जाता है। शिष्य अपने गुरु की प्रत्येक बात को शिरोधार्य समझकर उसे पूरा करता था। गुरु भी अपने शिष्यों को सत्यता, कर्तव्यपरायणता की शिक्षा देता रहे है लेकिन वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में गुरु शिष्य की परम्परा निस्तेज हो रही है। "मास्टर और बच्चे "कविता में बच्चों के साथ-साथ शिक्षक भी अपने कर्तव्य से विमुख होकर नैतिक पतन की और अग्रसर है -

बार- बार सच्चाई लिखते अध्यापक / चिड़ चिड़े हो आये है
बार-बार झूठ पढ़ते / बच्चे पीले
पीठ पीछे अध्यापक का मुँह चिढ़ा रहे है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य के झरोखे से झांक कर देखा जाये तो समाज नैतिक मूल्यों से खोखला हो चुका है। आज माता- पिता, भाई- बहन, पति-पत्नी आदि रिश्ते अपने पवित्र रूप को खो चुके है। आपसी तनाव एवं बदलते परिवेश के कारण इन संबंधो में टूटन एवं दरार आ गई है। आम आदमी को अपनी स्वार्थपूर्ति एवं पिपासा शांत करने के लिए नैतिक मूल्य घृणित प्रतीत होते है क्योंकि उनकी आँख पर अमानवीयता का चश्मा चढ़ा हुआ है। सामाजिक परिवेश में व्यक्ति सच को त्यागकर झूठ के सागर में डूब चुका है। नैतिक शक्ति के बिना न समाज उन्नति कर सकता है और न व्यक्ति। वर्तमान युग की विडंबना है कि समस्त परिवार का पालन पोषण करने वाली ममता की साक्षात मूर्ति " माँ " उपेक्षित एवं कारुणिक जीवन जी रही है -

अब नहीं सह पाती / कुछ भी अधिक
ठण्ड या गर्मी का शोर या खाना या भूख प्यास
भरे-पूरे नौ परिवारों को, आज / नौ परिवारों को
खल रही है उसकी खाँसी रात-बिसात की
बार- बार दवा / दवा की गंध
जबकि कौन-कौन नहीं रोया था।
उसकी घरेलू गंधों में बसी कीचड़ की गोद में।

अत: वंशी जी कविताओं में नैतिक मूल्य और नैतिक चेतना का स्वर बड़ा प्रबल है। समस्याओं का विस्तार से वर्णन, उनका समाधान उन्हीं के शब्दों में उनके पात्रों द्वारा सहज ही पाठक को मिल जाता है।

संदर्भ

1. डॉ० हरदेव बाहरी, राजपाल हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ 818
2. डॉ० हरदेव बाहरी, राजपाल हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ 650
3. बलदेव वंशी, दर्शक दीर्घा से, पृष्ठ 35
4. बलदेव वंशी, मन्यु, पृष्ठ 43
5. बलदेव वंशी, पत्थर तक जाग रहे है, पृष्ठ 58
6. बलदेव वंशी, दर्शक दीर्घा से, पृष्ठ 96
7. बलदेव वंशी, अंधेरे के बावजूद, पृष्ठ 85
8. बलदेव वंशी, आत्मदान, पृष्ठ 47
9. बलदेव वंशी, मन्यु, पृष्ठ 38
10. डॉ० हरदेव बाहरी, राजपाल हिंदी शब्दकोश पृष्ठ 99
11. बलदेव वंशी, अंधेरे के बावजूद, पृष्ठ 10
12. बलदेव वंशी, अंधेरे के बावजूद, पृष्ठ 10
13. बलदेव वंशी, दर्शक दीर्घा से, पृष्ठ 35
14. बलदेव वंशी, दर्शक दीर्घा से, पृष्ठ 60-61
15. डॉ० बलदेव वंशी, मन्यु, पृष्ठ 61
16. डॉ० हरदेव बाहरी, राजपाल हिंदी शब्दकोश
17. बलदेव वंशी, दर्शक दीर्घा से, पृष्ठ 96
18. बलदेव वंशी, कहीं कोई आवाज नहीं, पृष्ठ 80
19. बलदेव वंशी, पत्थर तक जाग रहे है, पृष्ठ 91- 92